Brought by cbsemath.com the no.1 CBSE Math website

Most documents contain more than one page. Remember to see all pages

For Required document move down to second page

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र–I
कोड संख्या – 002
कक्षा – 12
हिन्दी (ऐच्छिक)

समय : 3 घंटे | अधिकतम अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–** $2 \times 5 = 10$

जाति–प्रथा को यदि श्रम–विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम–श्रमिक–समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धांत के विपरीत जाति–प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण जैसे माता–पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार, पहले से ही अर्थात गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

जाति–प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन–भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है, क्योंकि उद्योग–धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी–कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है।

जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो, तो इसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति–प्रथा भारत में बेरोजगारी एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

(क) 'जाति –प्रथा को स्वाभाविक श्रम–विभाजन' नहीं कहा जा सकता।' क्यों? 2

(ख) जाति–प्रथा के सिद्धांत को दूषित क्यों कहा गया है? 2

(ग) ''जाति–प्रथा पेशे का न केवल दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण करती है बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे से बाँध देती है'' – कथन पर उदाहरण–सहित टिप्पणी कीजिए। 2

(घ) भारत में जाति–प्रथा बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण किस प्रकार बन जाती है? – उदाहरण सहित लिखिए। 2

(ड.) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 2

2. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** 2×5=10

प्रात नभ था बहुत नीला, शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल, ज़रा–से लाल केसर से
कि जैसे घुल गई हो।
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मलदी हो किसी ने।
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और...
जादू टूटता है इस उषा का अब,
सूर्योदय हो रहा है।

(क) उपर्युक्त कविता में किसके लिए और क्यों कहा गया है? –
''राख से लीपा गया चौका'' (अभी गीला पड़ा है) 2

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों में कौन–सा अलंकार है? 2

(i) प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे।

(ii) बहुत काली सिल ज़रा–से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो।

(ग) इस कविता की उन दो काव्य–पंक्तियों का उल्लेख कीजिए जहाँ सर्वाधिक सुंदर बिंब–विधान बन पड़ा है और क्यों? 2

(घ) भाव स्पष्ट कीजिए – 2
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो। 2

(ड.) उषा का कौन–सा जादू था और वह कैसे टूट गया? 2

अथवा

क्या रोकेंगी मुझे विषमता, क्या झंझाओं के बर्तन।
मुझे पथिक कब रोक सके हैं, जीवन के उत्थान–पतन!
मैं गतिशील पथिक हूँ, मेरे रुके आज तक नहीं चरण
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने कभी चयन
मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए
फिर क्या कर पाएँगे, ये जग के खंडन–मंडन!
मुझे झुलाता आया युग से लहरों का भीषण कंपन,
मेरी श्वास छिपाए फिरती ज्वालामुखियों की धड़कन!
मैं बढ़ता अविराम निरंतर, चाहों का उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे ये तूफानों के गर्जन!
मैं अटका कब, कब भटका मैं, सतत डगर मेरा संबल
बाँध सकी पगले कब मुझको, यह युग ही प्राचीर निबल
आँधी हों, ओले वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी
फिर मेरा पथ क्या रोकेगी, अंतर की कोमल धड़कन!

(क) उपर्युक्त काव्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए! 2

(ख) इस काव्यांश में मुख्य रूप से किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है? 2

(ग) निम्नलिखित के द्वारा कवि ने किन–किन स्थितियों अथवा भाव–दशाओं को व्यक्त किया है? 2

(i) झंझाओं के नर्तन

(ii) शूल और फूल

(घ) कविता के आधार पर कवि की किन्हीं दो चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 2

(ड.) उपर्युक्त आत्मा–बोधात्मक अभिव्यक्ति द्वारा स्वयं कवि क्या उपलब्ध कर लेना चाहता है? 2

3. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग दो–सौ शब्दों में एक लेख लिखिए–** 5

(i) सावन की पहली झड़ी

(ii) मेरा प्रिय टाइमपास

(iii) एक कामकाजी औरत की शाम

4. **दिन–दिन बढ़ती मँहगाई की समस्या के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए 'नवभारत टाइम्स' के संपादक को एक पत्र लिखिए।** 5

अथवा

मानव–संसाधन–विभाग के महाप्रबंधक को 'मार्केटिंग एक्ज़क्यूटिव' पद के लिए एक आवेदन पत्र लिखिए।

5. **मुद्रण माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य किन्हीं पाँच बातों का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।** 5

अथवा

जनसंचार के माध्यमों में प्रिंट, रेडियो और टी.वी. की क्या–क्या प्रमुख विशेषताएँ और सीमाएँ हैं? यह भी स्पष्ट कीजिए कि इन माध्यमों के समाचार लेखन में किन–किन विशिष्ट बातों का ध्यान रखा जाना अपेक्षित है?

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–दो वाक्यों में दीजिए:–** $1 \times 5 = 5$

(क) रेडियो समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए?

(ख) बेवसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किस साइट को प्राप्त है?

(ग) टी.वी. पर प्रसारित किए जाने वाले समाचार किन–किन चरणों से होकर दर्शकों तक पहुँचते हैं?

(घ) विशेष रिपोर्ट के कितने प्रकार होते है, लिखिए।

(ड.) बीट किसे कहते हैं?

7. **निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:–** 4

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर–नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर –मंगल कुंकुम सारा।

अथवा

कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय बचन सवारे।
''उठहु तात! बलि मातु बदन पर, अनुज सखा सब द्वारे''।।
कबहुँ कहति यों ''बड़ी बारभइ जाहु भूप पहँ, भैया।
बंधु बोलि जेंइय जो भावै गई निछावरि मैया।''

8. **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–** $2 \times 3 = 6$

(क) **ëॅवह लता वहीं की, जहाँ कली तू खिलीíí** पंक्ति द्वारा निराला जी ने किस प्रसंग को उद्घाटित किया है?

(ख) 'एक कम' कविता के आधार पर बताइए कि **''मैं तुम्हारा विरोधी, प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं''** से कवि का क्या अभिप्राय है?

(ग) विद्यापति के पद के आधार पर नायिका के प्राण तृप्त न होने का कारण अपने शब्दों में लिखिए।

(घ) **'बनारस'** कविता के आधार पर बताइए कि बनारस में वसंत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है?

9. **निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक का काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिएः–** 5

यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाउ।
मकु तेहि मारग होइ परौं कंत धरै जहँ पाउ।।

अथवा

तोड़ो तोड़ो तोड़ो
ये ऊसर बंजर तोड़ो
ये चरती परती तोड़ो
सब खेत बनाकर छोड़ो
मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को
गोड़ो गोड़ो गोड़ो।

10. **तुलसीदास अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।** 5

अथवा

भीष्म साहनी अथवा रामविलास शर्मा के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा–शैली की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

11. **निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः–** 5 + 5

(क) **'रूप व्यक्ति–सत्य है, नाम समाज–सत्य।** नाम उस पद को कहते है जिस पर समाज की मुहर लगी होती है। आधुनिक शिक्षित लोग जिसे **'सोशल सेक्शन'** कहा करते हैं। मेरा मन नाम के लिए व्याकुल है, समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा प्रमाणित, समष्टि–मानव की चित्त–गंगा में स्नात।'

(ख) भीड़ लड़के ने दिल्ली में भी देखी थी, बल्कि रोज़ देखता था। दफ़्तर जाती भीड़, खरीद–फ़रोख्त करती भीड़, तमाशा करती भीड़, क्रास करती भीड़। लेकिन इस भीड़ का अंदाज़ निराला था। इस भीड़ में एकसूत्रता थी। न यहाँ जाति का महत्व था, न भाषा का, महत्व उद्देश्य का था और वह सबका समान था, जीवन के प्रति कल्याण की कामना। इस भीड़ में दौड़ नहीं थी, अतिक्रमण नहीं था।

(ग) पुर्जे खोलकर फिर ठीक करना उतना कठिन काम नहीं है, लोग सीखते भी हैं, सिखाते भी हैं, अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो।

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–** 2+2+2 = 6

(क) **'गांधी, नेहरु और यास्सेर अराफ़ात'** पाठ के आधार पर अराफ़ात के आतिथ्य–प्रेम से संबंधित किन्ही दो घटनाओं का वर्णन कीजिए।

(ख) **''ईमान। ऐसी कोई चीज मेरे पास हुई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल ही नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा कौड़ी के हो ही नहीं सकता।''** – के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? 'कच्चा चिट्ठा' पाठ के आधार पर बताइए।

(ग) **'प्रेमघन की छाया–स्मृति'** पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक का हिंदी–साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया?

(घ) 'प्रमाण से अधिक महत्त्वपूर्ण है विश्वास **''शेर'** कहानी के आधार पर टिप्पणी कीजिए। 4

13. साहित्यकार के लिए स्रष्टा और द्रष्टा होना अत्यंत अनिवार्य है–क्यो और कैसे? **'यथास्मै रोचते विश्वम्'** निबन्ध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, कैसे? **'जहाँ कोई वापसी नहीं'** यात्रा–वृत्तांत के आधार पर उत्तर दीजिए।

14. **''अंतराल''** भाग–2 के आधार पर निम्नलिखित में से किन्ही **दो** प्रश्नों का उत्तर दीजिए:– 5 + 5

(क) **''सूरदास की झोपड़ी'** पाठ के आधार पर निम्नलिखित कथन के आलोक में सूरदास की मनोदशा को स्पष्ट कीजिए–**''सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय–गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा।''**

(ख) जगधर के मन में किस तरह का ईर्ष्या–भाव जागा और क्यों? **'सूरदास की झोंपड़ी'** पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ग) **'आरोहण'** कहानी में **'पत्थर की जाति'** से लेखक का क्या आशय है उसके विभिन्न प्रकारों के विषय में लिखिए।

15. **'अंतराल'** भाग–2 के आधार पर निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 5+5

(क) **''बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ़ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन–चरित होता है।''**– कथन पर **''बिस्कोहर की माटी''** के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

(ख) ''हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी के नाले बना रही है।'' **'अपना मालवा'** लेख में आए इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(ग) **'अपना मालवा'** लेख के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि धरती का वातावरण दिन–प्रतिदिन क्यों गरम हो रहा है?'' इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है?

प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र–I
अंक – योजना
कक्षा – 12
हिन्दी (ऐच्छिक)

समय : 3 घंटे | अधिकतम अंक –100

<u>आवश्यक निर्देश:</u>

(i) परीक्षक प्रश्न के पूरे उत्तर को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

(ii) अंक–योजना के अनुसार प्रश्न के समस्त उत्तर –बिंदुओं को देखें और अंक–योजना में वितरित किए गए अंकों के आधार पर ही परीक्षार्थी को अंक दें।

(iii) यदि उत्तर परीक्षार्थी के स्तरानुसार पूरी तरह ठीक है तो उसे शत–प्रतिशत अंक दिये जाएँ।

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
1	**<u>अपठित गद्यांश बोध:</u>**	2 × 5 = 10
	(क) जाति–प्रथा को स्वाभाविक श्रम–विभाजन नहीं कहा जा सकता, क्योकि वह मनुष्य की रुचि पर आधारित न होकर अनिवार्य रूप से जन्म पर आधारित है।	2
	(ख) जाति–प्रथा का सिद्धान्त इसलिए दूषित है, क्योंकि वह व्यक्ति की क्षमता या रुचि के अनुसार उसके चुनाव पर आधारित नहीं है। वह माता–पिता की जाति पर ही पूरी तरह अवलंबित और निर्भर है।	2
	(ग) जाति–प्रथा व्यक्ति की क्षमता, रुचि और उसके चुनाव पर निर्भर न होकर पहले से ही –गर्भाधान के समय से ही, व्यक्ति की जाति का पूर्व निधारिण कर देती है जैसे धोबी, कुम्हार, सुनार आदि।	2
	(घ) उद्योग धंधों की प्रक्रिया और तकनीक में निरंतर विकास और परिवर्तन हो रहा है, जिसके कारण व्यक्ति को अपना पेशा बदलने की जरुरत पड़ सकती है। यदि वह ऐसा न कर पाए तो उसके लिए भूखे मरने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं रह पाता। बेरोज़गारी से तंग आए व्यक्ति के लिए कोई और चारा भी तो नहीं रहता। उदाहरण के लिए ड्राईक्लीनिंग आदि के विकास ने धोबियों को बेरोजगार बना दिया है।	2
	(ड.) 'जाति–प्रथा : एक अनावश्यक बंधन', 'जाति प्रथा : एक दूषित परंपरा', 'जाति प्रथा पर आधारित श्रम–विभाजन'। इसी प्रकार का कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक स्वीकार करें।	2

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
2.	**<u>अपठित काव्यांश बोधः</u>** **अंक विभाजन :–**	2×5=10
	(क) सूर्योदय से पूर्व का आकाश; क्योकि वह धुँधला–धुँधला और ओस में भीगा लग रहा था।	2
	(ख) (i) उपमा अलंकार। (ii) उत्प्रेक्षा अलंकार।	1+1=2
	(ग) 'नील जल में या किसी की और झिलमिल देह–जैसे हिल रही हो' यह काव्य–पंक्ति अत्यंत सुंदर है; क्योंकि इसमें अत्यंत सजीव और मनोरम बिंब–विधान बन पड़ा है। जल में डुबकी लगाए गौर–वर्ण व्यक्ति की हिलती हुई देह जैसा ही भोर का आकाश लालिमामय हो जाता है। (परीक्षार्थी किसी अन्य काव्य–पंक्ति को भी समुचित तर्क–सहित उद्धृत कर सकता है; जैसे–'स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मलदी हो किसी ने ')	2
	(घ) प्रातः कालीन आकाश में सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य ऐसा लग रहा था, मानो नीले जल में किसी गौरवर्ण व्यक्ति ने डुबकी लगाई हो और उसका गोरा शरीर जल में हिलता हुआ प्रतीत हो रहा हो।	2
	(ङ.) उषा का सौंदर्य हर व्यक्ति को ऐसा विमुग्ध कर लेता है कि वह भाव–विभोर होकर उसे देखता ही रह जाता है। उसकी रस–विमुग्ध स्थिति ऐसी हो जाती है जैसे उस पर किसी ने जादू कर दिया हो। जादू की यह स्थिति सूर्योदय होते ही भंग हो जाती है, क्योंकि उषा का वह अनिर्वचनीय सौंदर्य समाप्त हो जाता है।	2
	अथवा	
	(क) मैं अदम्य गतिशील मुसाफ़िर / सच्चा राही	2
	(ख) उत्साह, साहस और निर्भीकता की।	2
	(ग) (i) जीवन में आने वाली भयानक बाधाएँ (ii) बाधाएँ और मधुर उपलब्धियाँ / दुख और सुख	2
	(घ) कवि जीवन में उत्साह, संकल्प धैर्य और निडरता को अपनाए हुए, हर व्यवधान की उपेक्षा करते हुए निरंतर आगे बढ़ने का संकल्प लिए चल रहा है।	2
	(ङ.) कवि अपनी मंजिल को अपने ही बलबूते पर, अपने शौर्य व साहस के द्वारा पा लेना चाहता है। इस मार्ग में आने वाली हर बाधा को नकार देना चाहता है।	2

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
3.	किसी भी एक विषय पर लगभग दो सौ शब्दों में रचित निबंध पर इस प्रकार अंक दिए जाएँ:– (i) आकर्षक भूमिका .... 01 (ii) विषय–निर्वहन .... 01 (iii) विषय–प्रतिपादन क्षमता और भाषा–शिल्प .... 1+1 (iv) उपसंहार 01	5
4.	(i) पत्र की ऊपर की व्यवस्थित औपचारिकताएँ .... 01 (ii) पत्र की नीचे की औपचारिकताएँ .... 0½ (iii) कलात्मक और प्रभावशाली ढंग से विषय–प्रतिपादन.. 02 (iv) भाषा–शैली 1½	5
5.	मुद्रण माध्यम ने ज्ञान को बढ़ाने और उससे भी अधिक उसे अगली पीढ़ियों तक सुरक्षित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीनकाल में ज्ञान का अपार भंडार केवल सुन सुनाकर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता था। पत्रकारिता और संचार की दृष्टि से समाचार पत्र और पत्रिकाओं को ही लिखित संचार माध्यम के रूप में मान्यता मिली। दुनिया में नई–नई खोजों, राजनीतिक घटनाओं, युद्धों, प्रकृति के संघर्षों की खबरों आदि की विस्तृत जानकारी हमें अखबारों के माध्यम से ही सबसे पहले मिलती है। खबरों के साथ–साथ ज्ञानवर्धक सामग्री, लेख, सम्पादकीय हमें समय के साथ कदम मिलाकर चलने की सीख देते हैं। मुद्रण माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य निम्नलिखित बातों को प्रस्तुत किया जा सकता है– 1. मुद्रण माध्यम में दिया गया समाचार विश्वस्त और सच्चा होना चाहिए। क्योंकि प्रजातंत्र में छपी खबरों का दूरगामी प्रभाव होता है। 2. मुद्रण माध्यम में दी गई घटना या समाचार विस्तार से दिया जाना चाहिए। क्योंकि उसका उपयोग बाद में भी सबूत के तौर पर किया जाता है। 3. ध्यान रहे कि समाचार पत्र में छपी खबर पर महीनों तक बहस चलती है। इसलिए उसके हर पहलू पर संतुलित रूप में लिखा जाना चाहिए। 4. समाचार पत्रों में परीक्षा–परिणाम भी छपते हैं, जिनमें अशुद्धि होने पर उनके दूरगामी परिणाम भी हो सकते हैं।	1+1+1+ 1+1=5

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
	5. नागरिकों की समस्याओं को छापते हुए भी विशेष सावधानी बरती जानी चाहिए। 6. प्रजातंत्र में समाचार पत्रों की विशेष जिम्मेदारी होती है। अतएव मुद्रण माध्यम एक सामाजिक शक्ति है, जिसका उपयोग–प्रयोग बहुत सँभलकर किया जाना चाहिए। 7. समाचार माध्यमों में दी जाने वाली घटना या समाचार एक दम नया होना चाहिए। 8. समाचार माध्यमों में समाचारों का शीर्षक बहुत सोच–समझकर दिया जाना चाहिए। (उपर्युक्त बिन्दुओं में से किन्हीं पाँच का उल्लेख किया जा सकता है।) **अथवा** संचार माध्यमों में समाचार पत्रों, दूरदर्शन और रेडियो तीनों की महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं। इन सभी माध्यमों में समाचारों का मुख्य आधार 'सूचना' को माना जाता है। सामान्यतः किसी भी नई घटना या घटना में आए नए मोड़ को समाचार माना जाता है। इसे पत्रकारिता की भाषा में 'स्टोरी' या 'आइटम' भी कहा जाता है। समाचार पत्र जनसंचार का एक लिखित और पठित माध्यम है। जिसकी तुलना में रेडियो और दूरदर्शन की कहीं अधिक व्यापक और दूरगामी भूमिका और उपयोगिता है। रेडियो और दूरदर्शन के लाभ अशिक्षित व्यक्ति भी उठा सकता है तथा दूरदर्शन दृश्य–सामग्री पर आधारित होने के कारण उन लोगों तक भी अपनी पहुंच रखता है जो उस भाषा–विशेष को नहीं समझते। इन माध्यमों में समाचार लेखन का कार्य करते समय ध्यान रखना चाहिए कि वे नवीन हों, वे उत्तेजक और सनसनी फैलाने वाले न हो, वे सच्चाई लिए हुए हों, उनके शीर्षक संतुलित हों, उनमें गागर में सागर भरा हो। उन्हें पाठक या श्रोता अच्छी तरह और सहज ही समझ सकें; इसलिए उनकी भाषा सरल–सहज हो।	5
6.	(क) जिसमें आम बोलचाल की भाषा के साथ–साथ सटीक मुहावरों का भी प्रयोग किया गया हो। (ख) रीडिफ़ डॉटकॉम को (ग) ये चरण हैं– फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज, ड्राई एंकर, फ़ोन–इन, एंकर विज़ुअल, एंकर बाइट, लाइव, एंकर पैकेज (कोई चार लिखने पर पूर्ण अंक प्रदान किए जाएँ)	1×5=5

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
	(घ) खोजी रिपोर्ट, इन डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट।	
	(ङ.) खबरें कई तरह की होती हैं– राजनीतिक, आर्थिक, खेल, फ़िल्म, कृषि आदि। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।	
7.	**अंक–विभाजनः** • कवि और कविता का नामोल्लेख ½ अंक • कविता का संदर्भ–प्रसंग 1 अंक • व्याख्या 2 अंक • काव्य–सौंदर्यगत टिप्पणी ½ अंक	4
	संदर्भः • कवि जयशंकर प्रसाद • कविता–कार्नेलिया का गीत	
	प्रसंग– प्रस्तुत गीत प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' के द्वितीय अंक के आरंभ में सेल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया द्वारा गाया गया है। इस गीत में उसकी भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति गहरी आस्था व्यक्त हुई है।	
	व्याख्या–बिंदुः (i) कार्नेलिया गाती है कि यह देश प्राकृतिक सुषमा और सौंदर्य का भंडार है। यह कांति मान, मधुर और प्रिय देश है। (ii) यहाँ पहुँचकर अनजान क्षितिज को–अजाने भूखंडों से आने वाले लोगों को सहारा मिलता है। (iii) यहाँ सूर्योदय के समय सरोवरों में स्वर्ण कमल खिलते हैं। उनके कोषों में पराग और सुगंध भरी होती है। (iv) यहाँ सूर्य की सुनहरी किरणें वृक्षों की शाखाओं से छनती हुई पुष्पों पर नृत्य करती हैं। (v) यहाँ हरी–भरी वनस्पतियों पर पड़ती हुई सूर्य–किरणें ऐसी प्रतीत होती हैं मानो उन पर जीवन ही बिखेर दिया गया हो उन पर मंगल कुंकुम बरसा दिया गया हो।	
	विशेष – भारत की प्रकृति एवं संस्कृति और भारतीयों की उत्कृष्टता का सुंदर चित्रण किया। भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
	अथवा संदर्भ • कवि–तुलसीदास • कविता–'पद' **प्रसंग**: राम के वन चले जाने पर उनके वियोग में माता कौशल्या की दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। **व्याख्या–बिंदु** – (i) कौशल्या भावाकुल दशा में याद करती हैं कि वे प्रातः काल होने पर उन्हें जगाते हुए कहती थीं–"तात, उठो। तुम्हारे छोटे भाई और मित्र दरवाजे पर खड़े हैं। तुम्हारी माँ तुम्हारे इस प्यारे मुख पर बलिहारी हैं। (ii) कभी कहती थीं कि उठो, बहुत देर हो गई है। जाओ, राजा के पास जाकर बैठो। तुम्हारे मन में जो भी आए, वहाँ जाकर कहना। **विशेष**:– पुत्र–वियोग में माँ कौशल्या की स्थिति का बड़ा ही करुणा जनक चित्र खींचा गया है।	4
8.	किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं :– **अंक–विभाजन**: (i) उपयुक्त कथ्य....................................1½ अंक (ii) भाषा–शैली.. ½ अंक (क) इस काव्य–पंक्ति में कवि उद्घाटित करता है कि सरोज का पालन पोषण ननिहाल में हुआ था। वह वहीं लता की तरह बढ़ी और फूली–फली और वहीं वह कली के रूप में खिली अर्थात् वहीं वह बालिका से नवयुवती बनी थी। (ख) 'एक कम' कविता के माध्यम से कवि विष्णु खरे ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में गिरते हुए जीवन–मूल्यों के बीच अपनी निर्लज्ज स्थिति और असमर्थता प्रकट की है। वह कहता है कि वह किसी होड़ या प्रतियोगिता में शामिल नहीं है। वह धोखे से मालामाल होते समाज के बीच कोई बाधा–अवरोध भी खड़ा नहीं करता। वह कहता है कि उसे कुछ मिले या न मिले, वह किसी के लिए भी ख़तरा बनना नहीं चाहता। (ग) विद्यापति पदावली से उद्धृत पद में नायिका अपने प्रेम के संबंध में बताती हुई कहती है कि प्रेमानुभूति का वर्णन नहीं किया जा सकता। यदि उस प्रेम तथा अनुराग का वर्णन किया जाए तो वह क्षण–प्रतिक्षण नव–नवीन होता रहता है। राधा अपने प्राण अतृप्त बने रहने का कारण बताती हुई	2+2+2 = 6

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
	कहती है कि कृष्ण के रूप–सौंदर्य को देखते हुए कभी तृप्त नहीं हो पाती।	
	(घ) कवि केदारनाथ सिंह अपनी कविता 'बनारस' में कहते हैं कि इस शहर में वसंत कहकर नहीं, बल्कि अचानक आ जाता है। यहाँ वसंत का अजीब रूप दिखाई देता है। कवि ने इसे बनारस के मुहल्लों, गलियों और कूँचों की ओर से उठते बवंडर के रूप में देखा है। वसंत का प्रभाव यहाँ सर्वत्र दिखाई देता है।	
9.	**अंक–विभाजन:** (i) कथ्य का सौंदर्य 2 अंक (ii) शिल्प का सौंदर्य 1 अंक (iii) भाषा का सौंदर्य 1 अंक (iv) अलंकार और रस 1 अंक	5
	प्रस्तुत पंक्तियों में कविवर जायसी ने नागमती की विरह–वेदना का अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण करते हुए कहा है कि वियोगाग्नि में अपने इस शरीर को जलाकर राख कर दूँगी। इस राख को पवन उड़ाकर ले जाए और मेरे प्रियतम के मार्ग में बिछा दे, ताकि मेरा प्रियतम उस राख पर अपने कदम रखकर चल सके। चलो, कम–से–कम मैं इस तरह तो उनका स्पर्श प्राप्त कर ही लूँगी।	
	इस प्रकार कवि ने अतिशयोक्ति द्वारा अपनी विरह–वेदना का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है।	
	इन पंक्तियों में चौपाई छंद है, भाषा अवधी है और रस वियोग श्रृंगार है।	
	अथवा	
	'तोड़ो' कविता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि रघुवीर सहाय की एक उद्बोधनात्मक कविता है जिसमें कवि एक ओर चट्टानों और बंजर भूमि को तोड़ने को कहता है तो दूसरी ओर मन में व्याप्त ऊब और खीज को भी तोड़ने का आह्वान करता है। कवि ने बाह्य जगत के ऊसरपन और अंतर्जगत के ऊब और रिक्तता पैदा करने वाले बंजरपन–दोनों को ही तोड़ने का आह्वान किया है। मन में व्याप्त ऊब तथा खीज की यह सादृश्य–धर्मिता बहुत ही सशक्त बन पड़ी है।	
	इस कविता में नए उपमानों द्वारा कवि ने अपने क्रान्तिकारी विचार प्रस्तुत किए हैं। 'तोड़ो–तोड़ो' और 'गोड़ो–गोड़ो' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। इसमें तुकांत शब्दों का सुंदर प्रयोग द्रष्टव्य है। भाषा सरल–सुबोध है।	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
10.	तुलसीदास अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय अपेक्षित है। अंक–विभाजन इस प्रकार है– ● कवि का जीवन–परिचय 1½ अंक ● कवि का साहित्यिक परिचय / रचनाएँ 2 अंक ● कवि की काव्यगत विशेषताएँ 1½ अंक अथवा भीष्म साहनी अथवा रामविसाल शर्मा के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय अपेक्षित है। अंक विभाजन इस प्रकार है – ● लेखक का जीवन–परिचय 1½ अंक ● लेखक का साहित्यिक परिचय / रचनाएँ 2 अंक ● भाषा शैली पर टिप्पणी 1½ अंक	5
11.	निम्नलिखित तीन गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित हैः ● संदर्भ 1 अंक ● व्याख्या 3 अंक ● विशेष 1 अंक (क) ● **संदर्भ** – हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित लेख 'कुटज' कुटज को देखकर लेखक का मन उसके नाम का स्मरण करने के लिए छटपटाता है। तब वह नाम के सामाजिक और ऐतिहासिक महत्व के विवेचन में उलझ जाता है। ● **भाषा** – संस्कृत के तत्सम और तद्‌भव शब्दों से युक्त शुद्‌ध साहित्यिक खड़ी बोली। (ख) ''क'' भाग की तरह ही व्याख्या अपेक्षित है। अंक–विभाजन भी उसी प्रकार है। इस गद्यांश में बताया गया है कि हरिद्वार की भीड़ दिल्ली की भीड़ से अलग थी। यहाँ किसी जाति, भाषा का महत्त्व नहीं था। यहाँ समानता का महत्त्व था। सभी में जीवन के प्रति कल्याण–भावना थी। (ग) 'क' भाग की तरह ही व्याख्या अपेक्षित है। अंक–विभाजन भी उसी प्रकार है। इस गद्यांश में लेखक बताता है कि जैसे घड़ी के कल–पुर्जे खोजकर उन्हें फिर से व्यवस्थित करके जोड़ने वाले व्यक्ति को कोई धोखा नहीं दे सकता, उसी प्रकार धर्म का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर उसे धार्मिक दृष्टि से उल्लू नहीं बनाया जा सकता।	5×2=10

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
12.	किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित। अंक–योजना इस प्रकार हैः • प्रश्न के उपयुक्त उत्तर–बिंदु 1½ अंक • भाषा–शैली ½ अंक (क) यास्सेर अराफात की मेहमान नवाजी पर प्रकाश डालने के लिए निम्नलिखित दोनों घटनाओं का उल्लेख आवश्यक है– 'लोटस' संस्था के संपादक द्वारा लेखक को सदर मुकाम के कार्यक्रम में ले जाना और वहाँ यास्सेर अराफात की मेहमान नवाजी का वर्णन करना। वहाँ उनका स्वागत वहाँ के बीसेक अधिकारी और लेखकों ने किया। दूसरी घटना में अराफात फल छील–छीलकर लेखक को खिला रहे थे, उनके लिए शहद की चाय बना रहे थे। लेखक को तब बड़ी झेंप हुई जब गुसलखाने के बाहर यास्सेर अराफात स्वयं तौलिया लिए खड़े थे। (ख) इन पंक्तियों के द्वारा लेखक ब्रज मोहन व्यास कहते है कि उन्होंने दो रुपए में प्राप्त बोधिसत्व की मूर्ति को संग्रहालय में रख दिया था। यह मूर्ति बहुत प्राचीन थी, बहुत मूल्यवान थी। एक फ्रांसीसी व्यापारी ने उसे दस हजार रुपए देकर खरीदने का प्रस्ताव रखा किन्तु लेखक टस से मस नहीं हुआ। इस घटना के बावजूद लेखक यह दावा नहीं करता कि वह ईमानदार है। वस्तुतः उसके पास डिगने के लिए ईमान है ही नहीं, इसीलिए वह इतना बड़ा संग्रहालय स्थापित कर सका। (ग) लेखक के घर में हिंदी–प्रेम का वातावरण तो बचपन से ही था। जब वह क्वींस कॉलेज में पढ़ता था तब स्वर्गीय रामकृष्ण वर्मा उनके पिता जी के सहपाठियों में से एक थे। 16 वर्ष की अवस्था तक पहुँचते – पहुँचते उसे काशी प्रसाद जायसवाल, भगवान दास हालना, पं. बदरीनाथ गौड़, पंडित उमाशंकर द्विवेदी आदि का संसर्ग–सम्पर्क भी मिला। (घ) 'शेर' कहानी में लेखक ने प्रतिपादित किया है कि प्रमाण से अधिक विश्वास ही मानव–जीवन में महत्त्वपूर्ण है। लेखक कहानी के माध्यम से कहता है कि जितने भी ठग और मक्कार लोग होते हैं वे अपने कथन के समर्थन में कोई प्रमाण तो दे नहीं सकते, हाँ विश्वास करने का आग्रह करते हैं। वे लोगों के विश्वास का लाभ उठाते हैं। कहानी में शेर और उसके साथी भी ऐसा ही करते हैं। वे लोगों को रोजगार दिलाने का विश्वास दिलाते हैं और उन्हें ठगते हैं।	2+2+2 = 6

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
13.	लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से करते हुए उसे उसके कर्म के प्रति सचेत किया है। कवि की सृष्टि निराधार नहीं होती। जिन रेखाओं और रंगों से कवि चित्र बनाता है, वे उसके चारों ओर यथार्थ जीवन में बिखरे होते हैं उसके पाँव धरती पर और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी होती हैं। साहित्यकार अपने साहित्य में जनता का रोष और असंतोष प्रकट करता है, उसे आत्मविश्वास और दृढ़ता देता है। अपनी रुचि के अनुसार विश्व को परिवर्तित करता है। अथवा औद्योगीकरण रूपी आँधी ने लोगों को उनकी घर–जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित का दिया है। औद्योगीकरण के कारण प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच का नाजुक संतुलन नष्ट होता जा रहा है। पहले बाढ़ या भूकंप के कारण लोग अपना घरबार छोड़कर कुछ समय के लिए जरुर बाहर चले जाते थे, किंतु खतरा टलते ही पुनः– अपने परिवेश में लौट आते थे किंतु विकास व प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता है तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते। उनका परिवेश व आवास स्थल हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है।	3+1=4
14.	'अंतराल' भाग–2 के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर अपेक्षित हैं। अंक–विभाजन इस प्रकार हैः • उपयुक्त कथ्य 4 अंक • उपयुक्त भाषा–शैली 1 अंक } 5 अंक (क) सूरदास ने सुना कि घीसू मिठवा को चिढ़ाते हुए कह रहा था ''खेल में 'रोते हो!'' इन शब्दों ने हताश सूरदास के मन का सारा नैराश्य धो डाला। वह उठ खड़ा हुआ। उसके मन ने उसे चेताया –'लड़के भी खेल में रोना बुरा समझते हैं, रोने वाले को चिढ़ाते हैं, और मैं खेल में रोता हूँ। सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाज़ी पर बाज़ी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के पर धक्के सहते हैं, पर मैदान में डटे रहते हैं, उनकी त्योरियों पर बल नहीं पड़ते हिम्मत उनका साथ नहीं छोड़ती, दिल पर मालिन्य के छींटे भी नहीं आते। खेल में रोना कैसा? खेल हँसने के लिए है, दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नहीं।' मन की इसी विजय तरंग में वह उठ खड़ा हुआ और राख के ढेर को दोनो हाथों से उड़ाने लगा। (ख) भैरों के हाथ में पाँच सौ से भी अधिक रुपयों की थैली देखकर जगधर के मन में ईर्ष्या जाग उठी। वह सोचने लगा – यदि इतने रुपए मेरे पास होते तो जिदंगी सफल हो जाती। फिर तेल की मिठाई बेचते हुए गलियों	5×2=10

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	अंक
	के चक्कर तो न लगाने पड़ते। तब तो दो–तीन दुकानों का ठेका ले–लेता।	
	(ग) 'आरोहण' में रूप ने पत्थर की अनेक जातियों का उल्लेख किया है – इग्नियस, ग्रेनाइट – मेटामार फ़िक, सैंड स्टोन और सिलिका। 'पत्थर की जाति' से तात्पर्य है – अनेक रूप–गुण और विशेषताओं से युक्त पत्थर।	
15.	किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित।	5× 2=10
	अंक विभाजन : • उपयुक्त कथ्य 4 अंक • भाषा–शैली 1 अंक	
	(क) 'बिस्कोहर की माटी' लेख में विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा है– ''बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं हैं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवनचरित होता है।'' वस्तुतः लेखक ने बड़ी सच्चाई और गहराई से उपर्युक्त कथन में माँ–बच्चे के अकथनीय मधुर संबंध को व्यक्त किया है। माँ की गोद में लेटकर, उसकी छाती से चिपककर बच्चा जब माँ का दूध पीता है तो एक अनिवर्चनीय भावधारा माँ और बच्चे दोनों के मन–प्राणों में पुलक बनकर बहती है। इस आनंद को ही लेखक ने माँ और बच्चे दोनों के संबंधों का जीवनचरित कहा है।	
	(ख) 'अपना मालवा –खाऊ – उजाड़ू सभ्यता में' – लेख में प्रभाष जोशी ने कहा है कि नगरों में औद्योगिक सभ्यता के विकास के नाम पर पर्यावरणीय विनाश का प्रसार किया जा रहा है। निर्मल जल से भरी नदियों पर बड़े–बड़े बाँध बना दिए गए हैं, जिनके कारण वे सदानीरा बनी रहने वाली नदियाँ गंदे पानी के छोटे–छोटे नाले बनकर रह गई हैं।	
	(ग) लेखक का मत है कि आज मालवा की धरती निर्मल जल और भरपूर अन्नमयी नहीं रह गई है। हमारे समुद्रों का पानी गरम हो रहा है, ध्रुवों पर जमी बरफ़ पिघल रही है, मौसमों का चक्र बिगड़ गया है तथा धरती का तापमान बढ़ चला है। इन सबका कारण वे गैसें हैं जो अमेरिका और यूरोप के अनेक देश आए दिन वातावरण में विकीर्ण कर रहे हैं।	

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र–2
हिन्दी (ऐच्छिक)
कक्षा – 12

समय 3 घंटे **अधिकतम–100**

1. **निम्नलिखित अपठित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए:–** 2×5 = 10

जिंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अन्ततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और जिंदगी का कोई मज़ा उसे नहीं मिल पाता; क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में, उसने जिंदगी को ही आने से रोक रखा है। जिंदगी से , अंत में, हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं। यह पूँजी लगाना जिंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढ़ना है जिसके सभी अक्षर फूलों से नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। जिंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह जानकर चलता है कि जिंदगी कभी भी खत्म न होने वाली चीज़ है।

अरे! ओ जीवन के साधकों! अगर किनारे की मरी हुई सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक–कोष को कौन बाहर लाएगा? कामना का अंचल छोटा मत करो, जिंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश में जिंदगी को ठीक ढंग से जीने के जो उपाय बताए गए है, उनमें से किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए। 2

(ख) गद्यांश में जीवन के साधकों को क्या चुनौती दी गई है? – स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) 'जिंदगी के सभी अक्षर फूलों से नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है? 2

(घ) गद्यांश के अनुसार जिंदगी का भेद किसे मालूम है और कैसे? 2

(ङ.) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 2

2. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :–** 2×5 = 10

मैंने फूल को सराहाः
''देखो, कितना सुंदर है, हँसता है।''
तुमने उसे तोड़ा
और जूड़े में खोंस–लिया
मैनें बौर को सराहा,

''देखो, कैसी भीनी गंध है!''
तुमने उसे पीसा
और चटनी बना डाली
मैंने कोयल को सराहाः
''देखो, कैसा मीठा गाती है!''
तुमने उसे पकड़ा
और पिंजरे में डाल दिया!
एक युग पहले की बातें ये
आज याद आती नहीं क्या तुम्हें
क्या तुम्हारे बुझे मन, हत–प्राण का है यही भेद नहीं
हँसी, गंध, गीत जो तुम्हारे थे
वे किसी ने तोड़ लिए, पीस दिए, कैद किए?
मुक्त करो!
मुक्त रहो!
जन्म भर की यह यातना भी
इस ज्ञान के समक्ष तुच्छ हैः
हँसी फूल में नहीं,
गंध बौर में नहीं,
गीत कंठ में नहीं,
हँसी, गंध, गीत – सब मुक्ति में है।
मुक्ति ही सौंदर्य का अंतिम प्रमाण है।

(क) कविता में 'फूल', 'बौर' तथा 'कोयल–कंठ' के प्रति कवि और उसकी प्रेयसी के दृष्टिकोण में क्या भिन्नता है? 2

(ख) कविता के आधार पर बताइए कि सौंदर्य के प्रति उपयोगितावादी दृष्टिकोण रखने वालों का जीवन अंततः कैसा हो जाता है? 2

(ग) कविता में उल्लिखित 'जन्म भर की यह यातना' से कवि का क्या अभिप्राय है? 2

(घ) कविता के अनुसार हँसी, गंध और गीत सब मुक्ति में ही हैं।– कैसे? 2

(ङ.) कविता में बुझे मन और हत प्राणों का क्या कारण बताया गया है? 2

अथवा

मिट्टी तन है, मिट्टी मन है, मिट्टी दाना–पानी है।
मिट्टी ही तन–बदन हमारा, सो सब ठीक कहानी है।

पर जो उलटा समझ इसे ही बने आप ही ज्ञानी है।
मिट्टी करता है जीवन को और बड़ा अज्ञानी है।
समझ सदा अपना तन मिट्टी, मिट्टी जो कि रमाता है।
मिट्टी करके सरबस अपना मिट्टी में मिल जाता है।
जगत है सच्चा तनिक न कच्चा समझो बच्चा इसका भेद।
खाओ पीओ कर्म करो नित कभी न लाओ मन में खेद।
रचा उसी का है यह जग तो निश्चय उसको प्यारा है।
इसमें दोष लगाना अपने लिए दोष का द्वारा है।
ध्यान लगाकर जो देखो तुम सृष्टि की सुघराई को,
बात–बात में पाओगे उस सृष्टा की चतुराई को।
चलोगे सच्चे दिल से जो तुम निर्मल नियमों के अनुसार
तो अवश्य प्यारे जानोगे, सारा जगत सच्चाई–सार।।

(क) उपर्युक्त काव्य–पंक्तियों के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 2

(ख) कवि ने मिट्टी की महिमा का बखान करते हुए क्या कहा है? 2

(ग) कौन लोग अपने तन–मन को मिट्टी में मिला देते हैं और कैसे? 2

(घ) कवि इन काव्य पंक्तियों के द्वारा क्या प्रेरणा देता है? 2

(ड.) संसार की रचना में दोष निकालना क्यों व्यर्थ है? 2

3. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग दो–सौ शब्दों में एक लेख लिखिए–** 5

(i) बरसात की एक भयानक रात

(ii) कक्षा का एक अविस्मरणीय दिन

(iii) अच्छा पड़ोस

4. **दिन–दिन बिगड़ती कानून और व्यवस्था की समस्या के प्रति चिंता प्रकट करते हुए नगर के पुलिस–कमिश्नर को एक पत्र लिखिए।**
5

अथवा

कल्पना कीजिए कि आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अध्ययन पूरा कर लिया है और 'नवभारत टाइम्स' अखबार में पत्रकार पद के लिए आवेदन भेजना चाहते हैं। इसके लिए एक आवेदन पत्र लिखिए।

5. **प्रमुख जनसंचार माध्यमों में से किन्हीं दो प्रमुख माध्यमों का उल्लेख करते हुए उनकी दो–दो मुख्य खूबियों और खामियों का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।** 5

अथवा

'विशेष लेखन' से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि विशिष्ट लेखन के विशेष पाठक होते हैं तथा उसकी भाषाशैली भी विशिष्ट होती है।

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–दो वाक्यों में दीजिए–** $1\times5=5$

(क) इंटरनेट पत्रकारिता के बहुत लोकप्रिय होने का सबसे प्रमुख कारण क्या है?

(ख) रेडियो समाचार की संरचना किस शैली पर आधारित होती है?

(ग) भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला?

(घ) फ़ीचर लेखन किसे कहते हैं?

(ड.) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में मुख्य अंतर क्या है?

7. **निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:–** 4

मुझ भाग्यहीन की तू संबल,
युग–वर्ष बाद जब हुई विकल।
दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।

अथवा

सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा। सुलगि सुलगि दगधै भै छारा।।
यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जरम करै भसमंतू।।
पिय सौ कहेहु सँदेसरा, ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि गई, तेहिक धुआँ हम लाग।।

8. **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25–30 शब्दों में दीजिए :–** 2+2+2 = 6

(क) **'यह दीप अकेला'** कविता के आधार पर बताइए कि कवि ने दीपक को **'स्नेहभरा'** तथा **'गर्वभरा मदमाता'** क्यों कहा है?

(ख) **'बनारस'** कविता में केदारनाथ सिंह ने बनारस की पूर्णता और रिक्तता को किस प्रकार दर्शाया है? अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) **'राधौ! एक बार फिर आवौ'** – पद में निहित करुणा और संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(घ) **'तोड़ो'** कविता में कवि को धरती और मन की भूमि में क्या–क्या समानताएँ दिखाई पड़ती हैं?

9. **निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक का काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:–** 5

(क) श्रमित स्वप्न की मधुमाया में,
गहन–विपिन की तरु छाया में,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने–
यह विहाग की तान उठाई।

(ख) सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहैं जहँ एक घटी।
निघटी रुचि मीचु घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी चटी।
अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरुज्ञान–गटी।
चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी जटी पंचवटी।।

10. **'जयशंकर प्रसाद'** अथवा **'विद्यापति'** के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 5

अथवा

'रामचंद्र शुक्ल' अथवा **'निर्मल वर्मा'** के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा–शैली की दो प्रमुख विशेषताओं का भी उल्लेख कीजिए।

11. **निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :–** 5 + 5

(क) कितना विशाल वह हृदय होगा जो सुख से, दुख से, प्रिय से, अप्रिय से विचलित न होता होगा! कुटज को देखकर रोमांच हो आता है। कहाँ से मिली है यह अकुतोभया वृत्ति, अपराजित स्वभाव, अविचल जीवन–दृष्टि।

(ख) अपनी आँखों से जगह देखकर, अपने हाथ से चुने हुए मट्टी के डगलों पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों–करोड़ों कोस दूर बैठे बड़े–बड़े मट्टी और आग के ढेलों–मंगल और शनैश्चर और बृहस्पति की कल्पित चाल कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है?

(ग) भारत की सांस्कृतिक विरासत यूरोप की तरह म्यूज़ियम्स और संग्रहालयों में जमा नहीं थी – वह उन रिश्तों से जीवित थी, जो आदमी को उसकी धरती, उसके जंगलों, नदियों– एक शब्द में कहें, उसके समूचे परिवुश के साथ जोड़ते हैं। अतीत का समूचा मिथक संसार पोथियों में नहीं, इन रिश्तों की अदृश्य लिपि में मौजूद रहता था।

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25–30 शब्दों में दीजिए :–** 2+2+2=6

(क) 'प्रेमघन की छाया–स्मृति' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक ने 'निस्संदेह' शब्द को लेकर किस प्रसंग का उल्लेख किया है?

(ख) "चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्तव्य पालन करना ही पड़ता है।" – लेखक ने यह वाक्य किस संदर्भ में कहा और क्यों? 'कच्चा चिट्ठा' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ग) **'संवदिया'** कहानी के आधार पर बताइए कि संवाद कहते वक्त बड़ी बहुरिया की आँखे' क्यों छलछला आईं?

(घ) **'गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफ़ात'** पाठ के आधार पर बताइए कि काश्मीर के लोगों ने नेहरू जी का स्वागत किस प्रकार किया?

13. साहित्य के पांचजन्य से लेखक का क्या तात्पर्य है? साहित्य का पांचजन्य मनुष्य को क्या प्रेरणा देता है? **'यथास्मै रोचते विश्वम्'** नामक निबन्ध के आधार पर बताइए। 4

अथवा

'दूसरा देवदास' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर 'अंतराल' भाग–2 के आधार पर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :– 5 + 5

(क) **'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी'** – **'सूरदास की झोंपड़ी'** पाठ के आधार पर इस पंक्ति की संदर्भ सहित विवेचना कीजिए।

(ख) **'आरोहण'** कहानी के आधार पर बताइए कि शैला और भूप ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नई जिंदगी की कहानी लिखी।

(ग) **''तो हम भी सौ लाख बार बनाएँगे''** इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।

15. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर 'अंतराल' भाग–2 के आधार पर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :–** 5 + 5

(क) **लेखक को क्यों लगता है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक'** सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है? आप क्या मानते हैं? टिप्पणी कीजिए।

(ख) **'प्रकृति सजीव नारी बन गई'** – इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकृति, नारी और सौन्दर्य–संबंधी मान्यताएँ स्पष्ट कीजिए।

(ग) गरमी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए। क्या आप भी उन उपायों से सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र–2
अंक योजना
हिन्दी (ऐच्छिक)
कक्षा – 12

समय : 3 घंटे | अधिकतम अंक : 100

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
1.	अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में अपेक्षित हैं –	2× 5=10
	(क) 1. जोखिम झेलना / संकटों का सामना करना 2. जोखिम से बचने की कोशिश न करना	2
	(ख) महत्वाकांक्षी बनो, संतोषी नहीं। अथक परिश्रम से ही जीवन में छिपे सुख को प्राप्त किया जा सकता है।	2
	(ग) जिंदगी में सुख –दुख दोनों मिलते हैं। कठिन परिस्थितियों से न घबराकर उनका सामना करना चाहिए।	2
	(घ) जो यह जानता है कि जीवन गतिशील है। इसमें सुख–दुख आते–जाते रहते हैं। जितने कष्ट झेलेंगे, उतना ही सुख प्राप्त होगा।	2
	(ङ.) साहस की जिंदगी / हिम्मत और जिंदगी।	2
2.	अपठित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में अपेक्षित है :–	2× 5=10
	(क) कवि और प्रेयसी का दृष्टिकोण पूर्णतः भिन्न है। कवि को फूल व आम्रमंजरी का सौंदर्य डाल पर लगे रहने में तथा कोयल का सौंदर्य स्वच्छंद रहने में दिखाई देता है जबकि प्रेयसी फूल का सौंदर्य केश विन्यास सजाने में, बौर का चटनी बनाने व कोयल के गीत का माधुर्य उसे बंदी बनाने में अनुभव करती है।	2
	(ख) जीवन अंततः नैराश्यपूर्ण व दुखी हो जाता है। क्योंकि संपत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार की भावना मन में संघर्ष उत्पन्न करती है।	2
	(ग) बंधन में बांधना या बंधन स्वीकारना जीवन भर कष्ट पहुँचाकर यातना देना।	2
	(घ) वस्तु का सौंदर्य मन की रुचि पर निर्भर करता है। सौंदर्य हँसते फूल, सुगंधित बौर और कोकिल के गीत कंठ में नहीं हैं बल्कि सच्चा सौंदर्य तो स्वच्छंद जीवन जीने में है। स्वतंत्र रहकर ही मनंष्य प्रसन्न रहता है, स्वेच्छा से कार्य कर सकता है।	2

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	(ड़) सौंदर्य और मधुरता के प्रति उपयोगितावादी दृष्टिकोण रखना, बंधन में बाँधना या बंधन स्वीकारना।	2
	अथवा	
	(क) मिट्टी की महिमा / हम मिट्टी होकर भी मिट्टी नहीं है।	2
	(ख) कवि ने कहा है कि हमारा तन, मन, समस्त भौतिक जीवन और साधन मिट्टी है। मिट्टी से सब बने हैं और उसी में विलीन हो जाना है।	2
	(ग) जो लोग अपने तन–मन को मिट्टी समझते हुए उसके रख–रखाव की विशेष चेष्टा नहीं करते, वे अपने तन–मन और जीवन मिट्टी में मिला देते हैं।	2
	(घ) कवि कहता है कि हमें अपना जीवन सच्चे नियमों के अनुसार चलाना चाहिए तभी हमारा जीवन कृत–कृत्य हो सकेगा।	2
	(ड़) क्योंकि ध्यान से देखने पर सृष्टा की चतुराई समझ में आ जाती है।	2
3.	किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में एक लेख अपेक्षित है –	
	भूमिका / प्रस्तावना	1 अंक
	विषय–वस्तु	2 अंक
	समापन / निष्कर्ष	1 अंक
	भाषा–शैली / प्रस्तुति	1 अंक
		कुल 5 अंक
4.	पत्र–लेखन औपचारिकताएँ	2 अंक
	विषय सामग्री / प्रतिपादन और अभिव्यक्ति	3 अंक
		कुल 5 अंक
5.	प्रमुख जनसंचार माध्यम –	
	प्रिंट, टी.वी., रेडियो और इंटरनेट।	
	किन्हीं दो जनसंचार माध्यमों का उल्लेख व उसकी दो–दो मुख्य खूबियों व खामियों का उल्लेख अपेक्षित है –	1 + 2 + 2 = 5 अंक
	प्रिंट माध्यम	
	खूबियाँ– 1. स्थायित्व	
	2. लिखित भाषा का विस्तार	
	3. चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत/मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	खामियाँ– 1. निरक्षरों के लिए अनुपयोगी 2. पाठकों के भाषा–ज्ञान के साथ–साथ उनके शैक्षिक ज्ञान व योग्यता का विशेष ध्यान रखना। 3. पाठकों की रुचियों व ज़रूरतों का ध्यान। 4. निश्चित अवधि पर प्रकाशित 5. शब्द सीमा का ध्यान **रेडियो** **खूबियाँ –** 1. श्रव्य माध्यम 2. रेडियो मूलतः एक रेखीय माध्यम जहाँ शब्दों और ध्वनियों का महत्त्व। 3. निरक्षरों के लिए उपयोगी। **खामियाँ –** 1. रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं। 2. बुलेटिन के प्रसारण समय का इंतजार। 3. संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग में सावधानी। **टेलीविज़न** **खूबियाँ –** 1. दृश्यों का महत्व, शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों। 2. ध्वनियों का महत्त्व, आम आदमी का माध्यम। 3. वाक्य – आपसी बोलचाल के, छोटे, सीधे और स्पष्ट हों। **खामियाँ –** 1. टी.वी. समाचार में भाषा और शैली के स्तर पर काफी सावधानी। 2. टी.वी. के लिए खबर लिखते समय बाइट का ध्यान रखा जाता है, जो वॉयस ओवर या दृश्यों का अंतराल भरने के लिए पुल का भी काम करते हैं। **इंटरनेट** **खूबियाँ –** 1. इंटरनेट की सुविधा चौबीसों घंटे उपलब्ध 2. दूनिया भर की चर्चाचों व परिचर्चाओं में शामिल। 3. अखबारों की पुरानी फाइलें उपलब्ध।	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	4. सूचनाओं के आदान–प्रदान का बेहतरीन औजार। 5. खबरों के बैकग्राउंडर तैयार करने में तत्काल सहायता। **खामियाँ** 1. अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी ज़रिया। 2. कंप्यूटर साक्षर व्यक्ति के लिए ही उपयोगी। 3. हिंदी फ़ौंट (की–बोर्ड) की कमी। किन्हीं दो संचार माध्यमों का उल्लेख 1 अंक दो–दो खूबियाँ व कमियाँ 2 + 2 अंक अथवा विशेष लेखन–यानी किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। अधिकतर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी.वी. और रेडियों चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग 'डेस्क' होता है। व्यापार का अलग डेस्क, खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क होता है। किसी खास विषय पर लेख या स्तंभ लिखने वाले उस विषय के जानकार या विशेषज्ञ होते हैं। विशेष लेखन का संबंध जिन विषयों या क्षेत्रों से है, उनमें से अधिकांश तकनीकी रूप से जटिल क्षेत्र। उनसे जुड़ी घटनाओं और मुद्दों को समझना आम पाठक के लिए कठिन। अतः विशेष लेखन की आवश्यकता। हर क्षेत्र विशेष की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जैसे कारोबार पर विशेष लेखन करते हुए उसमें इस्तेमाल होने वाली शब्दावली से परिचित होना चाहिए। जैसे – तेजड़िए, बिकवाली, ब्याज दर, राजस्व घाटा, निवेश, आयात, निर्यात आदि। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। शैली कथात्मक या उलटा पिरामिड शैली कोई भी हो सकती है। विशेष लेखन का पाठक वर्ग अलग होता है। जो पाठक पढ़ते हैं, उनकी अपेक्षा यह होती है कि उन विषयों या क्षेत्रों के बारे में ज्यादा विस्तार और गहराई से बताया जाए।	1 + 2 + 2 = 5 अंक
6.	सही उत्तर लिखने पर पूरे अंक प्रदान किए जाएँ– (क) इससे न केवल समाचारों का संप्रेषण, पुष्टि या सत्यापन होता है, बल्कि खबरों के बैक ग्राउंडर तैयार करने में तत्काल सहायता मिलती है। (ख) उलटा पिरामिड–शैली (ग) भारत में पहला छापाखानाा सन् 1556 में गोवा में खुला। (घ) फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है, जिसका	1× 5=5

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	उद्देश्य पाठकों को सूचना देने शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।	
	(ङ.) बीट रिपोर्टिंग में संवाददाता में उस क्षेत्र के विषय में सामान्य जानकारी या दिलचस्पी होना पर्याप्त है जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण होता है।	
7.	किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है –	
	1. संदर्भ–कवि व कविता का नामोल्लेख	½ +½ = 1 अंक
	2. प्रसंग–पूर्वापर संबंधनिर्वाह	½ अंक
	3. प्रमुख भाव बिंदुओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित	2 अंक
	4. भाषागत विशेषताएँ	½ अंक
		कुल 4 अंक
	(1) कवि – सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाः कविता – 'सरोज स्मृति'	
	(2) काव्यांश निराला की दिवंगता पुत्री सरोज पर केंद्रित है। एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके संबंध, पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अकर्मण्यता बोध प्रकट हुआ हैं।	
	(3) **व्याख्या–बिंदु–**	
	नौजवान पुत्री के दिवंगत होने पर पिता का विलाप, स्वंय को भाग्यहीन मानना। पुत्री के प्रति–धर्म का पालन न कर पाने का अकर्मण्यता बोध व निराला के जीवन–संघर्ष का प्रकटीकरण।	
	(4) **विशेष** –तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली, मुक्त छंद, शोक गीत–करुण रस, अनुप्रास अलंकार, स्मृति बिंब आदि।	
	अथवा	
	(1) कवि – मलिक मुहम्मद जायसी	
	कविता – बारहमासा	
	(2) नायिका नागमती का विरह–वर्णन / अगहन माह में नायिका की विरह दशा का चित्रण।	
	(3) **व्याख्या – बिंदु** – अगहन माह में प्रेमी के वियोग में नायिका का विरह की अग्नि में जलना। भँवरे और काग के समक्ष अपनी स्थितियों का वर्णन करते हुए नायक को संदेश भेजना।	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	(4) **विशेष** –अवधी भाषा, चौपाई–दोहा छंद, वियोग श्रृंगार रस, विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास व वीप्सा अलंकारों का प्रयोग।	
8.	किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में अपेक्षित हैं :– (दो बिंदुओं का समावेश) (क) 'दीप' व्यक्ति का तथा 'पंक्ति' समाज का प्रतीक। दीप का पंक्ति में शामिल होना व्यक्ति का समाज में विलय होना है। दीप में स्नेह रूपी तेल, जिसकी लौ गर्व से मदमाती रहती है उसी प्रकार व्यक्ति में प्रेम के साथ–साथ अहंकार का मद भी होता है। (ख) 'बनारस' शहर के साथ मिथकीय आस्था–काशी और गंगा के सान्निध्य से मोक्ष की अवधारणा जुड़ी है। गंगा में बंधी नाव, मंदिरों–घाटों पर जलने वाले दीप पूर्णता दर्शाते हैं और दूसरी ओर कभी न बुझने वाली चिताग्नि, उनसे तथा हवन इत्यादि से उठने वाला धुआँ रिक्तता का बोध कराता है। (ग) इस पद में माँ कौशल्या राम के वियोग में दुखी अश्वों को देखकर राम से एक बार पुनः अयोध्यापुरी आने का निवेदन करती हैं। इस पद में पशुओं के प्रति करुणा भाव दर्शाया है व संदेश दिया है कि पशुओं के प्रति प्रेम व दया भाव रखना चाहिए। (घ) 1. धरती व मन दोनों बंजर 2. मन में व्याप्त ऊब और ख़ीज को तोड़ने की आवश्यकता। धरती को उर्वर बनाना ज़रूरी। 3. मन के भीतर की ऊब सृजन में बाधक, धरती को उर्बर बनाने में चटट्ानें व पत्थर बाधक। उन्हें तोड़ने की आवश्यकता पर बल।	2 + 2 + 2 = 6 अंक
9.	किसी एक काव्यांश का काव्य–सौंदर्य अपेक्षित — भाव सौंदर्य शिल्प सौंदर्य	2 3 कुल 5 अंक
	(क) **भाव–सौंदर्य**: देवसेना का अपने जीवन पर दृष्टिपात करते हुए अपने अनुभवों में अर्जित वेदनामय क्षणों को याद करना। स्कंदगुप्त का प्रणय निवेदन विहाग राग के समान प्रतीत होना। **शिल्प–सौंदर्य**: देवसेना की व्यथा का मार्मिक चित्रण, तुकांतता, छायावादी प्रभाव, लाक्षणिकता एवं गेयता, विशेषणों का प्रभावशाली प्रयोग, तत्सम शब्दावलीयुक्त खड़ी बोली का प्रयोग, रूपक व अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग आदि।	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	(ख) **भाव–सौंदर्यः** लक्ष्मण द्वारा 'पंचवटी' के माहात्म्य का सुंदर वर्णन। पंचवटी का दुख निवारण कर पवित्र व सात्विक भावों का विकास करना। इसकी शोभा से सुख की अनुभुति व मोक्ष के आनंद का भाव। पंचवटी की शिव से तुलना का भाव। **शिल्प–सौंदर्यः** अनुप्रास, यमक, उपमा व रूपक अलंकार। प्रसाद गुण, गेयता, तुकान्तता और मधुरता। सवैया छंद, ब्रज भाषा तथा शांत रस की व्यंजना।	
10.	किसी एक कवि का जीवन–परिचय, रचनाएँ व कोई दो काव्यगत विशेषताएँ अपेक्षितः–	
	संक्षिप्त जीवन परिचय	1½ अंक
	रचनाएँ (किन्हीं चार का उल्लेख करने पर)	2 अंक
	दो काव्यगत विशेषताएँ	1½ अंक
		कुल 5 अंक

जयशंकर प्रसाद

(सन् 1888 – 1937)

जीवन परिचयः जन्म–काशी

स्वाध्याय द्वारा संस्कृत, पालि, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं व साहित्य का गहन अध्ययन। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र और पुरातत्व के प्रकांड विद्वान। अत्यंत सौम्य, शांत व गंभीर प्रकृति। बहुमुखी प्रतिभा के धनी। मूलतः कवि लेकिन नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक विधाओं में सृजन।

रचनाएँ –प्रमुख रचनाएँ

नाटक – अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चद्रगुप्त, राजश्री, ध्रुवस्वामिनी।

उपन्यास – कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)

कहानी संग्रह – आँधी, इंद्रजाल, छाया, प्रतिध्वनि आकाशदीप।

निबन्ध संग्रह – काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध

कविताएँ – झरना, आँसू , लहर, कामायनी, कानन कुसुम और प्रेमपथिक।

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	काव्यगत विशेषताएँः– प्रसाद साहित्य में राष्ट्रीय जागरण का स्वर प्रमुख है। उनकी कविताओं व कहानियों में भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों की झलक मिलती है। प्रारंभिक रचनाओं की भाषा सरल–सुबोध है। परवर्ती रचनाओं में भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली। लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता तथा चित्रात्मकता काव्य भाषा की प्रमुख विशेषताएँ। अलंकारों में मानवीकरण, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि का प्रयोग। प्रबन्ध व मुक्तक शैली में रचना। अथवा **विद्यापति (सन् 1380 –1460)** **जीवन परिचयः–** जन्म–मधुबनी (बिहार) के बिस्पी गाँव, जो विद्या और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। मिथिला नरेश राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि व सलाहकार। अत्यंत कुशाग्र बुद्धि व तर्कशील। साहित्य, संस्कृति, संगीत, ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, न्याय, भूगोल आदि के प्रकांड पंडित। आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकवि कहे जा सकते हैं। **रचनाएँ** – कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, भू–परिक्रमा, लिखनावली और पदावली। **साहित्यिक विशेषताएँ** रचनाओं पर दरबारी संस्कृति और अपभ्रंश काव्य परंपरा का प्रभाव। पदावली के गीतों में भक्ति व श्रृंगार की गूंज पद–लालित्य, मानवीय प्रेम और व्यावहारिक जीवन के विविध रंग पदों को मनोरम और आकर्षक बनाते हैं। राधा–कृष्ण के प्रेम के माध्यम से लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण। प्रकृति संबंधी पद उनके अपूर्व कौशल, प्रतिभा व कल्पनाशीलता के परिचायक। संस्कृत, अवहट (अपभ्रंश) और मैथिली तीनों भाषाओं में रचना। अरबी–फ़ारसी के शब्दों का भी स्वाभाविक प्रयोग। अथवा किसी एक लेखक का संक्षिप्त जीवन परिचय, रचनाएँ व दो प्रमुख भाषा–शैली संबंधित विशेषताएँ अपेक्षित हैं –	
	संक्षिप्त जीवन परिचय	1½ अंक
	रचनाएँ (किन्हीं चार का उल्लेख)	2 अंक
	दो भाषा शैलीगत विशेषताएँ	1½ अंक
		कुल 5 अंक

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	रामचन्द्र शुक्ल **(सन् 1884 – 1991)** **जीवन परिचय** **जन्म**–उत्तर प्रदेश, बस्ती जिला, अगोना गाँव प्रारंभिक शिक्षा – उर्दू, अंग्रेजी व फ़ारसी। स्वाध्याय द्वारा संस्कृत, अंग्रेजी, बाँग्ला व हिंदी के प्राचीन व नवीन साहित्य का गहन अध्ययन। **'हिंदी शब्द सागर'** – सहायक संपादक, काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अध्यक्ष पद, उच्चकोटि के आलोचक, इतिहासकार व साहित्य – चिंतक हैं। **रचनाएँ** – हिंदी साहित्य का इतिहास, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, चिंतामणि (चार खंड) और रस–मीमांसा। **भाषा–शैली** – गद्य शैली विवेचनात्मक, जिसमें विचारशीलता, सूक्ष्म तर्क योजना तथा सहृदयता का योग। हास्य–व्यंग्य का पुट भाषा–शैली को जींवत और प्रभावशाली बनाता है। शब्द चयन व शब्द संयोजन व्यापक जिसमें तत्सम शब्दों से लेकर प्रचलित उर्दू शब्दों का प्रयोग। अत्यंत सारगर्भित, विचार प्रधान, सूत्रात्मक वाक्य रचना। अथवा **निर्मल वर्मा (1929–2005)** **जन्म–शिमला (हिमाचल प्रदेश)** दिल्ली विश्व विद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम. ए. किया तत्पश्चात् अध्यापन कार्य। चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य विद्या संस्थान प्राग के निमंत्रण पर सन् 1959 में वहाँ गए और चेक उपन्यासों व कहानियों का हिंदी अनुवाद किया। अंग्रेजी भाषा पर भी अधिकार। टाइम्स ऑफ़ इंडिया तथा हिंदुस्तान टाइम्स के लिए अनेक लेख लिखे। **रचनाएँ** – मुख्य योगदान – कथा साहित्य में **कहानी संग्रह** – परिंदे, जलती झाड़ी, तीन एकांत, पिछली गरमियों में, कव्वे और काला पानी, बीच बहस में आदि। **उपन्यास** – वे दिन, लाल टीन की छत, एक–चिथड़ा सुख तथा अंतिम अरण्य। **यात्रा–संस्मरण** – हर बारिश में, चीड़ों पर चाँदनी, धुंध से उठती धुन। निबन्ध संग्रह – शब्द और स्मृति, कला का जोखिम और ढलान से उतरते हुए।	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	भाषा–शैली – भाषा–शैली में एक ऐसी अनोखी कसावट, जो विचार–सूत्र की गहनता को विविध उद्धरणों से रोचक बनाती हुई विषय का विस्तार करती है। शब्दचयन में जटिलता न होते हुए उनकी वाक्य रचना में संयुक्त व मिश्र वाक्यों की प्रधानता। उर्दू व अंग्रेजी के शब्दों का भी स्वाभाविक प्रयोग।	
11.	किन्हीं दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है –	
	1. संदर्भ – लेखक व पाठ का नामोल्लेख	½+½ =1 अंक
	2. प्रसंग – पूर्वापर संबंध निर्वाह	½ अंक
	3. प्रमुख भाव बिंदुओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित	3 अंक
	4. भाषागत विशेषताएँ	½ अंक
		कुल 5 अंक
	(क) (1) हजारी प्रसाद द्विवेदी कुटज	
	(2) कुटज वृक्ष की विशेषताओं का उल्लेख, कुटज का जीवन मानव के लिए प्रेरणादायक।	
	(3) **व्याख्या–बिंदु**– कुटज में अपराजेय जीवन–शक्ति का होना, विषम परिस्थितियों को स्वीकारना, जीवन–दृष्टि के व्यापक होने का स्पष्टीकरण। मानव–जीवन के लिए शिक्षाप्रद भाव का प्रकटीकरण।	
	(4) (i) तत्सम शब्दों की बहुलता (ii) तर्कपूर्ण विवेचनात्मक शैली (iii) भाषा प्रभावशाली व ओजपूर्ण।	
	(ख) (1) पंडित चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' सुमिरिनी के मनके –'ढेले चुन लो'	
	(2) लोक विश्वासों में निहित अंधविश्वासी मान्यताओं पर चोट।	
	(3) **व्याख्या–बिंदु**– वैदिक काल में हिंदुओं द्वारा ढेले छुलाकर जीवन–साथी का चुनाव करने का स्पष्टीकरण। मंगल, शनि, बृहस्पति आदि ग्रहों की स्थिति पर विचार करना निरर्थक।	
	(4) **सरल** –सुबोध भाषा, ढेले का दृष्टांत। बोलचाल की भाषा होते हुए भी गंभीर विषय के प्रवर्तन में सक्षम।	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	(ग) (1) निर्मल वर्मा जहाँ कोई वापसी नहीं (2) अंधाधुंध विकास और पर्यावरण संबंधी सुरक्षा के बीच संतुलन आवश्यक। औद्योगीकरण के दुष्परिणामों को रेखांकित किया गया है। (3) **व्याख्या–बिंदु:–** औद्योगिक विकास के दौर में मनुष्य का प्राकृतिक परिवेश से दूर जाना। पर्यावरण संबंधी समस्याओं के कारण उसका अपने समाज, संस्कृति और परिवेश से विस्थापित होकर जीवन जीने के लिए विवश होना। भारतीय संस्कृति प्राकृतिक परिवेश से जोड़ती है, उसका अतीत पुस्तकों में नहीं आपसी संबंधों में मौजूद है। (iv) शब्द चयन सटीक, मिश्र वाक्य की प्रधानता।	
12.	किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (क) लेखक व उनके मित्रों की बातचीत प्रायः लिखने–पढ़ने की हिंदी में, जिसमें 'निस्संदेह' शब्द का प्रायः प्रयोग। वहाँ पर रहने वाले वकील, मुख्तारों तथा कचहरी के अफ़सरों ने इन लोगों का नाम 'निस्संदेह' रख दिया। (क) कौशांबी से लौटते समय एक पेड़ के सहारे चतुर्भुज शिव की मूर्ति देखकर कहा। मूर्ति को देखकर लेखक का जी ललचा गया, चुपचाप उस मूर्ति को इक्के पर रखवा लिया लेखक को संग्रहालय के लिए मूर्ति चाहिए थी उसे लाकर नगरपालिका में संग्रहालय से संबंधित एक मंडप के नीचे अन्य मूर्तियों के साथ रख दिया। (क) वर्तमान स्थिति से व्याकुल, एकाकी और घोर दरिद्रता का जीवन, दाने–दाने को मोहताज, दुख बाँटने वाला कोई नहीं। भाई–भाभी की नौकरी तक करने को तैयार। जिजीविषा समाप्त। मन की व्यथा आँखों से छलकने लगी। (क) कश्मीर यात्रा के दौरान लोगों द्वारा भव्य स्वागत। शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में, झेलम नदी पर, शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सातवें पुल से अमीराकदल तक, नावों में शोभा यात्रा। नदी के दोनों ओर हजारों कश्मीरियों द्वारा अदम्य उत्साह से स्वागत।	2+2+2=6
13.	पांचजन्य कृष्ण का शंख था जिसे वे युद्ध अभियान से पूर्व बजाकर अपना संकल्प या निश्चय प्रकट करते थे। साहित्य भी पांचजन्य के ही समान	3+1=4

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	जागृति और अभियान का संदेश देने वाली शक्ति / उद्घोष है। उससे पांजजन्य की ही तरह समाज व राज्य को नई कर्तव्य चेतना मिलती है। साहित्य मनुष्य को मानसिक विश्रांति के साथ–साथ उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है।	
	अथवा	
	'दूसरा देवदास' कहानी में युवामन की संवेदना, भावना विचारजगत की उथल–पुथल को प्रस्तुत किया गया है। कहानी में लेखिका ने इस तरह की घटनाओं का संयोजन किया है कि अनजाने में प्रेम का प्रथम अंकुरण संभव और पारो के हदय में बड़ी अजीब परिस्थितियों में उत्पन्न होता है। प्रथम आकर्षण व परिस्थितियाँ दोनों के प्रेम को मजबूती प्रदान करती हैं। कहानी में प्रेम की पवित्रता को प्रस्तुत किया गया है, अतः शीर्षक उचित।	
14.	किन्हीं दो प्रश्नों का सारगर्भित उत्तर अपेक्षित है–	5 + 5=10
	कथ्य	4 अंक
	भाषा	1 अंक = 5
	(क) भैरों द्वारा अपमान का बदला लेने के लिए सूरदास की झोंपड़ी में आग लगाकर रुपयों की पोटली ले जाना। सूरदास को झोंपड़ी जलने का दुख नहीं, उसके जीवन की सारी आशाओं की आधार रुपयों की थैली न मिलने का दुख था। फूस के राख होने के साथ ही सूरदास की सारी अभिलाषाएँ – कि गया जाकर पितरों का पिंडदान करना, मिठुआ की शादी करना, कुआँ बनवाना – चकनाचूर हो गई। अपनी बेबसी पर सूरदास बिलख – बिलखकर रोने लगा।	
	(ख) हिमांग पहाड़ का भूस्खलन से धँस जाना। भूपसिंह के माँ–बाबा, खेत, मकान सबका मलबे में दब जाना। भूपसिंह लाचार असहाय पर हिम्मत न हारना। धीरे–धीरे अकेले ही मलबा हटाना, खेती करना बाद में नीचे से शैला को लाना। शैला के साथ मिलकर खेती बढ़ाना, ढलवाँ खेत बनाना। हिमांग के ऊँचे हिस्से से गिरने वाले झरने को बड़ी मेहनत से पहाड़ काटकर खेतों की तरफ़ मोड़ना। मेहनत से पहाड़ काटकर चौबीसों घंटे आग जलाए रखना कि बर्फ पानी बन जाए। छोटे बछड़ों को नीचे से लाकर पाला, बैल बनाया।	
	(ग) एक दृष्टिहीन व्यक्ति बहुत बेबस और लाचार जीवन जीने को अभिशप्त होता है लेकिन सूरदास का चरित्र ठीक इसके विपरीत है। वह चैन से	

प्रश्न संख्या	उत्तर–संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	रहता है, खाता–पीता है, चेहरे पर निराशा का भाव नहीं, मेहनत से पाँच सौ रुपये जोड़ता है। सूरदास भैरों व जगधर द्वारा किए जा रहे अपमान व उनकी ईर्ष्या से दुखी व आहत भी है। उसके चरित्र की विशेषता है कि भैरों द्वारा झोंपड़ी में आग लगाने के बावजूद वह किसी से प्रतिशोध लेने में विश्वास नहीं करता बल्कि पुनर्निर्माण में विश्वास करता है। इसलिए वह मिठुआ के सवाल ''जो कोई सौ लाख बार झोंपड़ी में आग लगा दे तो।'' के जवाब में दृढ़ता से उत्तर देता है – ''तो हम भी सौ लाख बार बनाएँगे।''	
15.	किन्हीं दो प्रश्नों का सारगर्भित उत्तर अपेक्षित :– कथ्य भाषा	5 + 5=10 4 } 5 अंक 1 }
	(क) खाऊ–उजाड़ू सभ्यता यूरोप और अमेरिका की देन। पर्यावरण असंतुलित, वातावरण गरम, जिसके कारण विकास की औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता बन गई है। हम अपनी ही जीवन–पद्धति, संस्कृति, सभ्यता तथा अपनी धरती को उजाड़ने में लगे हैं। आधुनिक विकास ने मनुष्य को उसकी जड़–जमीन से अलग कर दिया है। सही मायनों में हम विकास की ओर नहीं विनाश की ओर बढ़ रहे हैं।	
	(ख) दस वर्ष की उम्र में करीब दस वर्ष बड़ी स्त्री को देखकर लेखक को चाँदनी रात में जूही की खुशबू का अहसास होना। वह स्त्री लेखक को औरत के रूप में नहीं जूही की लता बन गई चाँदनी के रूप में लगी, जिसके फूलों की खुशबू आ रही थी। लेखक उसमें आकाश, चाँदनी, सुंगधि सब देख रहे थे। प्रकृति ने मानो सजीव नारी का रूप ले लिया था। सौंदर्य, उसकी परिणति, जीवन की सार्थकता क्या होती है – यह सब बातें लेखक को उस स्त्री से मिलने के बाद ज्ञात हुईं। नारी शरीर से उन्हें बिस्कोहर की फसलें, वनस्पतियों की उत्कट गंध आती है।	
	(ग) धोती या कमीज से गाँठ बाँधकर प्याज बाँधना, लू लगने पर कच्चे आम का पन्ना। आम भूनकर गुड़ या चीनी में शरबत पीना, देह में लेपना, नहाना। कच्चे आम को भून या उबालकर उससे सिर धोना। ग्रामीण जीवन में शहरी दवाइयों की जगह प्राकृतिक उपचार किए जाते हैं। शहरों में रहने के कारण प्रायः लोग इनसे अपरिचित।	

प्रश्न पत्र प्रारूप
हिंदी (ऐच्छिक)
कक्षा – XII

समय : 3 घंटे | अधिकतम अंक : 100

प्रश्नों के प्रकार	अपठित बोध	लेखन	साहित्य	विशेष टिप्पणी
अति लघूत्तरात्मक प्रश्न		जनसंचार माध्यम 5(5)		पठन, अवबोध संबंधी
लघूत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 10(5) काव्यांश बोध 10(5)		काव्यांश अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न 6(3) गद्यांश अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न 6(3)	अवबोध व भाव ग्रहण योग्यता ″ पठन, अवबोध व लेखन कौशल संबंधी ″
दीर्घोत्तर प्रश्न		सृजनात्मक लेखन 10(2) जनसंचार माध्यम 5(5)	सप्रसंग व्याख्या 4(1) काव्य सौंदर्य 5(1) जीवनी 5(1) गद्य व्याख्या 10(2) गद्य विचारात्मक प्रश्न 4(1) अंतराल बोध 20(4)	अवबोध व लेखन कौशल अवबोध, पठन व लेखन कौशल ″ ″ पठन व लेखन कौशल ″ अवबोध, पठन व लेखन कौशल ″

नोट : प्रश्न संख्या कोष्ठक के भीतर व अंक कोष्ठक के बाहर हैं।